ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

miegkfun'kd ¼—f"k ekSle foKku½] Hkkjr ekSle foKku foHkkx] iq.ks — fun'ksd] ekSle dsUnz] nsgjknwu

o"kZ 27	vad 95	cqysfVu vof/k 1 fnlEcj & 5 fnlEcj] 2018	fnu% 'kqØokj	fnukad% 30 uoEcj] 2018

ekSle iwokZuqeku

भारत सरकार के iFoh foKku ea=ky; द्वारा वित्त पोषित एवं Hkkjr ekSle foKku foHkkx द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत jk"Vªh; ekSle iwokZuqeku dsUnz] Hkkjr ekSle foKku foHkkx] ekSle Hkou] ubZ fnYyh द्वारा पूर्वानुमानित तथा ekSle dsUæ] nsgjknwu द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा m/ke flag uxj esa vxys ikap fnuksa में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

iwokZuqekfur ekSle rRo	ekSle iwokZuqeku & m/ke flag uxj				
	01/12/2018	02/12/2018	03/12/2018	04/12/2018	05/12/2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	34	33	33	33	34
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	18	17	17	17	19
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	साफ	साफ	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	80	75	70	75
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	35	35	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	004	004	006	004
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम

xksfoUn cYyHk iUr d`f"k ,oa ikS|ksfxd fo'ofo|ky;] iUruxj fLFkr d`f"k ekSle foKku o/k'kkyk (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (23 – 29 नवम्बर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही आंशिक बादल छाये रहे। अधिकतम तापमान 25.5 से 28.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 9.4 से 12.7 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 92 से 95 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 46 से 67 प्रतिशत एवं हवा 1.1 से 2.3 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

Ñf"k ekle ijke'k

Qly çcU/k%

- समय से बोए गए गेहूँ में बुवाई के 20–25 दिन बाद आवश्यकतानुसार प्रथम सिंचाई करें। प्रथम सिंचाई के 3–4 दिन बाद जब खेत चलने लायक हो जाए तब बचे हुए नाइट्रोजन की आधी मात्रा का टॉपड्रेसिंग अपराहन में करना अधिक प्रभावी होता है।
- गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु दो निराई–गुड़ाई पर्याप्त होता है। पहली निराई–गुड़ाई बुवाई के 25–30 दिन बाद तथा दूसरी बुवाई के 45–50 दिन बाद करें। इससे खरपतवार तो नियंत्रण होता ही हैं साथ ही भूमि में समुचित हवा के संचार होने से कल्ले अधिक निकलते है।
- सिंचित दशा में चना की विलम्ब से बुवाई दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक पूरा कर लें। उन्नतशील प्रजातियों पूसा–372, उदय तथा पी0जी0186 का चुनाव कर बुवाई 20–25 से0मी0 की दूरी पर बनी लाइनों में करें तथा बीज की बुवाई 6–8से0मी0 की गहराई पर करे।
- समय से बोए गई चनें की फसल में दो बार निराई–गुड़ाई करें। पहली बुवाई के 25–30 दिन बाद तथा दूसरा पहली सिंचाई के बाद बुवाई के 45–50 दिन बाद करें।
- विलम्ब दशा में 15 दिसम्बर तक मसूर की बुवाई पूरी कर लें। बुवाई के 25–30 दिन बाद निराई गुड़ाई करें।
- तोरिया की 75प्रतिशत फलियां सुनहरे रंग की हो जाए तब कटाई करें। कटाई में देर न करें। अन्यथा दाने झड़ते है।
- अरहर की कटाई करे।
- पेड़ी गन्ना के रस में ब्रिक्स की मात्रा जाचते रहें। जब ब्रिक्स की मात्रा 18 प्रतिशत हो जाय तब नवम्बर माह में मिल से पर्ची आते ही सर्वप्रथम गन्ने की कटाई कर गन्ना मिल में भेजे तथा खाली हुए खेत की तैयारी कर रबी फसलों की समय से बुवाई करें।

m|ku çcU/k%

- पपीता, आम एवं लीची के नये रोपित पौधों को पाले से बचाने हेतु सूखी घास–फूस एकत्रित कर लें ताकि इन पौधों को पाले से बचाने हेतु 15 दिसम्बर एवं उसके बाद कवर किया जा सके।
- करी कीट के नियंत्रण हेतु पालीथीन स्ट्रिप का प्रयोग करें ताकि इन कीटों को पौधों के ऊपर चढ़ने से रोका जा सके। इसके लिए 25 से 30 सेमी चौड़ी पालीथीन लेकर पौधों के मुख्य तना पर जमीन की सतह से लगभग 30–40 सेमी ऊपर पौधों के तनों के चारों ओर से लपेट दें। लपेटने के उपरान्त पालीथीन की निचली तथा ऊपरी सतह पर ग्रीस या खराब तेल का प्रयोग करते हुए पालीथीन के दोनों शिरों को रस्सी से बांध दें।
- फूल गोभी में हल्की सिंचाई करें।
- मध्यकालीन गोभी के फूलों की तोड़ाई कर बाजार भेंजें।
- मूली की बुवाई वर्षभर चलती है। यूरोपियन प्रजातियों हेतु 6–8 किग्रा बीज तथा एशियन प्रजातियों हेतु 10–12 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- मूली के बीज बोने से पहले खेत में गोबर की खाद (सड़ी हुई) का प्रयोग करें। मृदा जांच के अनुसार उर्वरकों का प्रयोग करें। कतार की दूरी 20–25 सेमी रखें तथा बीज बोने पर अंकुरण होने पर अनावश्यक पौधों को उखाड़कर अलगकर पौधों से पौधो की दूरी 8–10 सेमी सुनिश्चित करें।
- लहसुन की फसल में निराई गुड़ाई एवं सिचाई करें।
- पछेती गोभी की पौध तैयार हो चुकी है तो उसकी रोपाई इस माह कर सकते है जिसके लिए सामान्य भूमि में 150 किग्रा नत्रजन, 80 किग्रा फॉस्फोरस व 60 किग्रा पोटाश की संस्तुति की जाती है। जिसमे से आधी नत्रजन एवं सम्पूर्ण फॉस्फोरस व पोटाश खेत की अंतिम जुताई के समय डालें।

Ikशk|ikyu i|cU/k%

- पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- ठंड में पशुओं के आहार में तेल और गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। अधिक ठंड की स्थिति में पशुओं को अजवाइन और गुड़ दें।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- पहाड़ी क्षेत्रों में पशुशाला में गर्मी हेतु हीटर का उपयोग करें। तथा अंगेठी का उपयोग धुंआँ निकलने के बाद कर सकते हैं।
- मुर्गियों के आवास के तापमान का अनुरक्षण करें।
- पशुओं को धान की कन्नी आहार के रूप में दें। जिससें उन्हें उर्जा और गर्मी मिलती है।
- इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
- जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
- खुरपका मुखपका के लक्षण– आँखें लाल होना, तेज बुखार होना (105–107°F), उत्पादन तथा आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी होना, मुहँ में छाले होना,लार गिरना समय से उपचार न मिलने की दषा में पशु के खुरों में घाँव बनना जिसकी वजह से पशुओं का लंगड़ाकर चलना आदि लक्षणों के आधार पर मुखपका खुरपका रोग की पहचान की जा सकती है। रोग के लक्षण पता चलते ही रोगी पशुओं को अन्य स्वस्थ पशुओं से तत्काल अलग कर दें। निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करायें तथा स्वस्थ पशुओं को चारा देने के उपरांत ही अंत में पीड़ित पशुओं को मुलायम हरा चारा दें। तदुपरांत हाथों को लाल दवा से अच्छी तरह साफ करें।
- इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- नवजात पशु की नाल को नए ब्लेड से काटकर उसमें गांठ लगा दें तथा उस पर बीटाडीन या टिंचर लगाना न भूलें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।

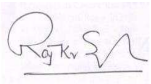

Mk0 vkj0 d0 flag
iz/;kid ,oa fLkfLkey ukMy vf/kdkjh
xkeh.k d`f"k ekSle lsok]
xks-c- iar d`f"k ,oa izks|ks- fo'ofo|ky;] iaruxj